[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.....

Sr. No. of Question Paper : 4215 **A**

Unique Paper Code : 62051201

Name of the Paper : Hindi Kavita (Madhyakal Aur Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

1. किन्हीं **दो** सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (10×2=20)

(क) सिखवति चलन जसोदा मैया ।

अरबराइ कर पानि गहावत, डगमगाइ धरनी धरे पैया ।

कबहुँक सुन्दर बदन विलोकति, उर आनन्द भरि लेत बलैया ।

कबहुँक कुल देवता मनावति, चिरजीवहु मेरौ कुँवर कन्हैया

P.T.O.

कबहुँक बल कौं टेरि बुलावति इति आँगन खेलौ भैया

सूरदास स्वामी की लीला, अति प्रताप बिलसत नंदरैया ।

(ख) रावरो रूप की रीति अनूप नयो नयो लागत ज्यों ज्यों निहारियै ।

त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी अघानि कहूँ नहि आनि तिहारियै ।

एक ही जीव हुतौ सु तौ वारयौ सुजान! संकोच और सोच सहारियै ।

रोकी रहै न, दहै घनआनन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) मृदु मिट्टी के बने हुए

मधु घट फूटा ही करते हैं

लघु जीवन लेकर आए हैं

प्याले टूटा ही करते हैं

फिर भी मदिरालय के अन्दर

मधु के घर हैं, मधु के प्याले हैं ।

(घ) आया जहाँ यौवन उन्हें बस भूत मानो चढ़ गया,

जीवन सफल करणार्थ अब उनमें अपव्यय बढ़ गया ।

सौंदर्य के शशि-लोक में सब ओर उनके चर उड़े।

गुडे 'पसीने की जगह लोहू' बहाने को जुड़े।।

2. कबीरदास की भाषा-शैली की विशेषताएं लिखिए। (12)

अथवा

तुलसीदास की भक्ति-भावना पर विचार कीजिए।

3. बिहारी के दोहों के अभिव्यंजना सौंदर्य पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

घनानंद 'प्रेम की पीर' के कवि हैं - सिद्ध कीजिए।

4. 'बीती विभावरी जाग री' कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'रईसों के सपूत' कविता के कथ्य पर प्रकाश डालिए।

5. 'उनको प्रणाम' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा-शैली पर विचार कीजिए। (12)

अथवा

गीत फरोश कविता का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

6. कबीर **अथवा** जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय लिखिए। (7)